Topic – Work motivation
(कार्य अभिप्रेरणा)

Dr. Kumari Sadhana Prasad
Associate Prof.
Dept of Psychology

Page ①

What is motivation?

Q → What is meant by work motivation? Is there any relation between work and motivation? State in brief.

(Q-216)

अभिप्रेरणा क्या है? कार्य-अभिप्रेरणा का क्या अर्थ होता है? कार्य तथा अभिप्रेरणा में क्या कोई सम्बन्ध है? संक्षेप में लिखें।

Ans:— अभिप्रेरणा व्यक्ति की वह जन्म-जात प्रवृत्ति है जिनसे वह किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए क्रियाशील बन जाता है और लक्ष्य तक पहुँचने पर उद्देश्य की प्राप्ति से ही उसे संतुष्टि होती है। परन्तु अभिप्रेरणा अर्जित प्रवृत्ति (aquired need) भी होती है जिसे ~~मानव~~ विशेष रूप से मानव बाह्य वातावरण से सीख लेता है। मनोवैज्ञानिक Woodworth के शब्दों में:—

"अभिप्रेरणा व्यक्ति की वह अवस्था या तत्परता है जो उसे किसी प्रकार के व्यवहार करने के लिए तथा किन्ही उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निर्देशित करती है।"

"A motive is a state or set of individual which disposes him of certain behaviour & for seeking certain goals"

इस प्रकार 'प्रेरणा' क्रिया करने की एक ऐसी प्रवृत्ति (Tendency to Activity) है जो 'चालक' (Drive) द्वारा संचालित होती है और 'समायोजन' (Adjustment) द्वारा पूर्ण होती है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि प्रेरणा किसी मनुष्य में किसी विशेष ध्येय को प्राप्त करने के लिए कोई क्रिया उत्पन्न करती है। क्रिया को किसी दिशा-विशेष में प्रभावित करती है और जब तक ध्येय पूरा नहीं हो जाता, तब तक उसे जारी रखती है, अर्थात क्रिया उत्पन्न करना उसे दिशा-विशेष में प्रभावित करना है और ध्येय की प्राप्ति तक क्रिया को बनाये रखना प्रेरणा की प्रमुख विशेषताएँ हैं। अतः व्यक्ति की जिस आन्तरिक अवस्था में ये

विशेषताएँ पाई जाती है, उसी को 'प्रेरणा' कहते है, सब को नहीं।

प्रेरणा में तीन ~~अनिहित~~ तत्व निहित है। इन तीनों तत्वों को मनोवैज्ञानिक भाषा में आवश्यकता (Need) प्रणोदन (चालक) (Drive) तथा प्रोत्साहन (Incentive) कहते हैं।

प्रेरणा के विस्तार को स्पष्ट रूप से समझने के लिए यह आवश्यक है कि इन तीनों तत्वों को अलग-अलग से समझा जाए।

1. (Need) आवश्यकता :—

प्रत्येक व्यक्ति की कुछ मौलिक आवश्यकताएँ होती हैं। मनुष्य का जीवन इन आवश्यकताओं पर आधारित होता है। शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति से वह जीवित रहता है और मानसिक आवश्यकताओं की पूर्ति से वह जीवन का उपभोग करता है। इस प्रकार जीवित रहने के लिए शारीरिक आवश्यकताओं की सदैव तृप्ति होनी चाहिए। मुख्य दैहिक आवश्यकताएँ हवा, भूख, प्यास, काम, मल-मूत्र का त्याग तथा अनेक दैहिक क्रियाएँ होती हैं। जब व्यक्ति की इन मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है तो उसका शारीरिक सन्तुलन बिगड़ जाता है। शारीरिक असन्तुलन का प्रभाव मानसिक क्रियाओं पर पड़ता है। उदाहरण के लिए, भूखा प्राणी चिड़चिड़ा और खूँखार हो जाता है। भूख के कारण उत्पन्न होने वाली मानसिक प्रक्रियाएँ संवेगों को जन्म देती हैं। काम-वासना की तृप्ति के कारण व्यक्ति असामान्य एवं असमायोजित होने लगता है। इसी प्रकार अन्य प्रेरणात्मक स्थितियाँ मानसिक व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

जब तक इन आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है, तब तक तनाव की स्थिति बनी रहती है। इस प्रकार 'आवश्यकता' (Need) प्राणी की भीतर की वह तनावपूर्ण स्थिति है जो लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति के अन्दर शारीरिक एवं मानसिक क्रिया-शीलता उत्पन्न व करती रहती है।

② प्रणोदन (चालक) (Drives) :—

मनुष्य के पास उपयुक्त आवश्यकताओं की तृप्ति की शक्ति ईश्वर-प्रदत्त (जन्मजात) होती है। मनुष्य इन आवश्यकताओं की तृप्ति के लिए तनाव की अनुभूति करता है और उसकी तृप्ति के लिए बेचैन हो जाता है। इसी अवस्था (बेचैनी) को प्रणोदन (चालक) (Drive) कहते हैं। 'प्रणोदन' ऊर्जा का वह मौलिक स्त्रोत है जो प्राणी के शारीरिक अंगों को कार्य करने के लिए बाध्य करता है।

आवश्यकता (Need) के अनुरूप ही तनाव का असर होता है। पानी की कमी के कारण प्यास, रोटी न मिलने के कारण भूख तथा यौन-जीवन की कमी के कारण कामेच्छा की अनुभूति होती है। इस अनुभूति की अतृप्ति के कारण तनाव उत्पन्न हो जाता है, जिसके कारण मानसिक सन्तुलन तथा समायोजन अव्यवस्थित हो जाता है।

③ प्रलोभन (Incentives) —

उद्योगों में प्रलोभनों का बहुत बड़ा महत्व है। कर्मचारी को कार्य करने की प्रेरणा इसी प्रकार के प्रलोभनों से ही मिलती है। जिन कारखानों तथा फैक्ट्रियों में कर्मचारियों को अच्छा वेतन, बोनस, वस्त्र, क्वार्टर और अन्य सुविधाएँ मिलती हैं, वहाँ यह पाया जाता है कि कर्मचारी अपने कार्यों में अत्यधिक रुचि लेता है। उत्पादन भी अधिक होती है और सम्पूर्ण कार्य-व्यवस्था सुचारु रूप में संचालित होती रहती है। इस प्रकार किसी बाहरी वस्तु को पाने से हमारी किसी भी आवश्यकता की पूर्ति और उसके चालक की तीव्रता में कमी आ जाती है, उसे 'प्रलोभन' कहते हैं। प्रलोभनों को विभिन्न भागों में बाँटा जाता है —

① धनात्मक प्रलोभन (Positive Incentive) —

जिन प्रलोभनों से मनुष्य की जन्मजात तथा अर्जित आवश्यकता की पूर्ति होती है और जिन्हें प्राप्त करने के लिए वह सरसक प्रयत्न करता है, उसे धनात्मक प्रलोभन (Positive Incentive) कहते हैं।